प्रातः क्लास 16/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। रूहानी बच्चे जानते हैं हम अपने लिए फिर से अपना दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं; क्योंकि तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हो ना। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ ही सिर्फ यह जानती हैं। यह भूलो मत; परन्तु माया भुला देती है। तुम देवता बनने चाहते हो; परन्तु माया तुमको घड़ी2 ब्राह्मण से शूद्र बना देती है। शिवबाबा को याद न करने से ब्राह्मण शूद्र बन जाते हैं। अभी बच्चों को यह मालूम है हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। जब राज्य स्थापन हो जावेगा फिर यह पुरानी सृष्टि न रहेगी। सभी को इस विषियस विश्व से शान्तिधाम भेज देते हो। यह है तुम्हारी भावना; परन्तु तुम जो कहते हो बाकी यह दुनिया आठ वर्ष में खत्म हो जानी है तो जरूर लोग विरोध करेंगे। शूद्र सम्प्रदाय कहेंगे ब्रह्माकुमारियाँ फिर यह क्या कहती हैं। विनाश, विनाश कहते ही रहते हैं। तुम जानते हो इस विनाश में ही खास भारत और आम दुनिया की भलाई है। यह बात दुनिया नहीं जानती। विनाश होगा तो सभी चले जावेंगे मुक्तिधाम। अभी तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय बने हो। पहले आसुरी सम्प्रदाय के थे। अभी ईश्वरीय सम्प्रदाय के बने हो। तुमको ईश्वर खुद कहते हैं मामेकम् याद करो। यह तो बाप जानते हैं सदैव याद में कोई रह नहीं सकते हैं। सदैव याद में रहें तो विकर्म विनाश हो जायें फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। नहीं। सभी पुरुषार्थी हैं। जो ब्राह्मण बनेंगे वही देवता बनेंगे। ब्राह्मण के पीछे हैं देवताएँ। बाप ने समझाया है ब्राह्मण है चोटी। जैसे बच्चे बाजोली खेलते हैं ना। पहले2 आता है माथा, चोटी। ब्राह्मणों को हमेशा चोटी होती है। तुम हो ब्राह्मण। पहले तो शूद्र अर्थात् पैर थे। अभी बने हो ब्राह्मण चोटी। फिर देवता बनेंगे। देवता कहते हैं मुख को, क्षत्री कहते हैं भुजा को, वैश्य कहते हैं पेट को, शूद्र कहते हैं पैर को। शूद्र अर्थात् क्षुद्र। तुच्छ बुद्धि। तुच्छ बुद्धि उनको कहते हैं जो बाप को नहीं जानते हैं और बाप की ग्लानि करते हैं। तब बाप कहते हैं जब जब भारत में धर्म की ग्लानि होती है.....जो भी भारतवासी हैं उन्हों से ही बात करते हैं। यदा यदा हि..... बाप आते भी हैं भारत में और कोई जगह नहीं आते। भारत ही अविनाशी खण्ड है। बाप भी अविनाशी है। वह कब भी जन्म–मरण में नहीं आते। बाप अविनाशी आत्माओं को ही आकर सुनाते हैं। यह शरीर तो है विनाशी। अभी तुम शरीर का भान छोड़ अपन को आत्मा समझने लगे हो। बाप ने समझाया था होली पर कोकी पकाते हैं तो कोकी सारी जल जाती है। धागा नहीं जलता है। आत्मा कब विनाश नहीं होती। इस पर यह मिसाल है। यह कोई भी मनुष्य मात्र को मालूम नहीं है कि आत्मा अविनाशी है। वह तो कह देते हैं आत्मा निर्लेप है। बाप कहते हैं, नहीं। आत्मा ही अच्छे वा बुरे कर्म करती है इस शरीर द्वारा। एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर ले फिर कर्मभोग भोगती है। तो वह हिसाब–किताब ले आई ना। इसलिए इस दुनिया में मनुष्य अपार दुख भोगते हैं। आयु भी कम हो जाती है; परन्तु मनुष्य इतने दुखों को भी सुख समझ बैठे हैं। तुम बच्चे कितना कहते हो निर्विकारी बनो। फिर भी कहते विख बिगर तो हम रह नहीं सकते हैं; क्योंकि वैश्यालय के शूद्र सम्प्रदाय हैं। क्षुद्र बुद्धि हैं। तुम बने हो ब्राह्मण चोटी। चोटी तो सबसे ऊँच है। देवताओं से भी ऊँच है। तुम देवताओं से भी ऊँच हो इस समय। क्योंकि बाप के साथ हो। बाप तुमको पढ़ाते हैं। ओबीडियन्ट सर्वेन्ट बना है। बाप बच्चों का ओबीडियन्ट सर्वेन्ट होता है ना। बच्चे को पैदा कर, उनकी सम्भाल पढ़ाये बड़ा बनाकर फिर बूढ़ा होता है। तो सारी मिलकीयत बच्चों को देकर खुद गुरु के किनारे जाकर बैठते हैं। वानप्रस्थी बन जाते हैं। मुक्तिधाम जाने लिए गुरु करते हैं; परन्तु वह मुक्तिधाम तो जा नहीं सकते। तो माँ–बाप दोनों ही बच्चों की सम्भाल करते हैं। समझो माँ बीमार है, बच्चे टट्टी कर देते हैं तो बाप को उठाना पड़े ना। तो बाप–माँ बच्चों के सर्वेन्ट ठहरे ना। सारी मिलकीयत बच्चों को दे देते हैं। बेहद का बाप भी कहते हैं मैं जब आता हूँ, तुम तो बड़े हो ना। तुमको बैठ शिक्षा देता हूँ। तुम शिवबाबा के बच्चे बनते हो तो अपन को ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। इनसे पहले शूद्र कुमार–कुमारी थे। वैश्यालय में थे। अभी तुम वैश्यालय में रहने वाले नहीं हो। यहाँ कोई विकारी रह न सके। हुकुम नहीं। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ।

यह स्थान है ही ब्रह्माकुमार–कुमारियों के रहने लिए। शूद्र कुमार–कुमारी पतितों को रहने का हुकुम नहीं है। ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ ही रह सकती हैं। बहुत अनारी बच्चे हैं जो यह भी समझते नहीं हैं। शूद्र कहा जाता है पतित विकार में जाने वाले को। उन्हों को यहाँ रहने का हुकुम नहीं है। आ ही नहीं सकते। इन्द्र सभी की भी बात है ना। इन्द्र सभा तो यह है ना। जहाँ ज्ञान बरसात होती है। कोई ब्रह्माकुमारी ने अपवित्र कुमारी को छिपाकर बिठाया तो दोनों को श्राप मिल गया कि पत्थर बन जाओ। सच्चा2 इन्द्रप्रस्त यह है ना। यह कोई शूद्र कुमार–कुमारियों का सतसंग नहीं है। साधु, सन्त, महात्मा आदि इस समय सभी पतित हैं। तब तो घड़ी2 जाते हैं गंगा स्नान करने। जहाँ मेला लगता है जाते हैं मैला होने। सभी को ले जाते हैं कि इसमें स्नान करने से हम पवित्र बन जावेंगे। पवित्र तो होते हैं देवताएँ। शूद्र होते ही हैं पतित। देवताएँ पावन होते हैं। शूद्र पतित को बाप आकर पावन देवता बनाते हैं। अभी तुम पतित से पावन देवता बन रहे हो। तो यह हो गई इन्द्रसभा। अगर बिगर पूछे कोई विकारी को ले आते हैं तो बहुत सजा मिल जाती है। पत्थर बुद्धि बन पड़ते हैं। यहाँ पारस बुद्धि बन रहे हैं ना तो उनको(जो ले आते हैं) भी श्राप मिल जाता है। तुम विकारियों को छिपाकर क्यों ले आई। इन्द्र(बाप) से भी पूछा नहीं। तो कितनी सजा मिल जाती है। यह है गुप्त बातें। अभी तुम देवता बन रहे हो। बड़ी कड़े कायदे हैं। अवस्था ही गिर पड़ती है। एकदम पत्थर बुद्धि बन पड़ते हैं। है भी पत्थर बुद्धि ही। पारस बुद्धि बनने का पुरुषार्थ करते ही नहीं हैं। यह गुप्त बातें हैं जो तुम बच्चे ही समझ सकते हो। यहाँ ब्रह्माकुमारियाँ रहती हैं। उन्हों को ही ईश्वर देवता बना रहे हैं। अर्थात् पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बना रहे हैं। तो बाप मीठे2 बच्चों को समझाते हैं कोई भी कायदे न तोड़े। 5 भूत उनको पकड़ लेगी। काम क्रोध.....यह 5 बड़े भूत हैं आधा कल्प के। तुम तो यहाँ भूतों को भगाने आये हो। आत्मा जो शुद्ध पवित्र थी वह पतित, दुखी, अशुद्ध, रोगी बन पड़ी है। इस दुनिया में अथाह दुख है। बाप आकर ज्ञान का वरसा करते हैं। तुम बच्चों द्वारा ही करते हैं। तुम्हारे लिए ही स्वर्ग रचते हैं। तुम ही ज्ञान योग बल से देवता बनते हो। बाप खुद नहीं बनते हैं। बाप तो सर्वेन्ट है ना। टीचर भी स्टुडेन्ट का सर्वेन्ट होता है। सेवा कर पढ़ाते हैं। टीचर कहते हैं हम तुम्हारा मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। कोई बैरीस्टर इंजीनियर आदि बनाते हैं तो सर्वेन्ट हुआ ना। वैसे ही गुरु लोग भी रास्ता बताते सर्वेन्ट बन। मुक्तिधाम ले जाते हैं तो सेवा करते हैं ना। परन्तु आजकल तो कोई गुरुलोग ले जा नहीं सकते। क्योंकि वह भी पतित हैं। एक ही सद्गुरु सदा पवित्र है। बाकी गुरु लोग तो सभी पतित है। यह सारी दुनिया ही पतित है। पावन दुनिया कहा जाता है सतयुग को, पतित दुनिया कहा जाता है कलियुग को। सतयुग को ही पूरा स्वर्ग कहेंगे। त्रेता में भी दो कला कम हो जाती है। यह बातें तुम बच्चे ही समझकर और धारण करते हो। दुनिया के मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ऐसे भी नहीं सारी दुनिया स्वर्ग में जावेगी। जो सतयुग त्रेता में कल्प पहले थे, वही भारतवासी फिर आयेंगे और सतयुग त्रेता में देवता बनेंगे। वही फिर द्वापर से अपने को हिन्दू कहलावेंगे। यूँ तो हिन्दू धर्म में अब तक भी जो आत्माएँ ऊपर से उतरती हैं वे भी अपने को हिन्दू कहलाती हैं। लेकिन वे तो देवता नहीं बनेंगे न स्वर्ग में आवेंगे। वे फिर भी द्वापर के बाद अपने2 समय पर उतरेंगे और अपने को हिन्दू कहलावेंगे। देवता तो तुम ही बनते हो। तुम ही बनते हो जिनका आदि से लेकर अन्त तक पार्ट है। यह ड्रामा में बड़ी युक्ति है। बहुतों की बुद्धि में नहीं बैठता। तो ऊँच पद भी नहीं पा सकते हैं। यह है सत्य ना0 की कथा। वह तो झूठी कथाएँ सुनाते हैं। उससे कोई ल0 वा ना0 बनते थोड़े ही हैं। वहाँ तो तुम प्रैक्टीकल में बनते हो। वह है सभी झूठी कथाएँ। कलियुग में है ही झूठ। सच खण्ड बाप बनाते हैं, फिर झूठ खण्ड रावण बनाती है। फिर सभी विकार प्रवेश हो जाते हैं। रावण–राज्य में ही भारतवासी जोर से गिरते हैं तो विकारी बन जाते हैं। भारत में रामराज्य, रावण राज्य कितना समय चलता है यह भी शूद्र सम्प्रदाय नहीं जानते हैं। तुम ब्राह्मण जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। शूद्र तो कुछ भी नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। क्योंकि पढ़ाई है। कोई बहुत थोड़ा पढ़ते हैं तो फेल

हो पड़ते हैं। यह तो एक ही बार पढ़ाई हो सकती है। फिर तो पढ़ना ही मुश्किल हो जावेगा। शुरू में पढ़कर गये हैं तो संस्कार वह लेकर गये हैं फिर आकर पढ़ते हैं। नाम रूप तो बदल जाता है। आत्मा को ही सारा 84 का पार्ट मिला हुआ है तो भिन्न2 नाम रूप देश काल बजाती रहती है। इतनी छोटी आत्मा इनको कितना बड़ा शरीर मिला हुआ है। आत्मा तो सभी में होती है ना। इतनी छोटी आत्मा हाथी में है तो इतने छोटे मच्छर में भी है। कितनी छोटी आत्मा है। उनको इन आँखों से देखा नहीं जा सकता। यह भी समझ की बात है। जो अच्छी रीति समझ सकते हैं वही माला का दाना बन सकते हैं। बाकी तो जाकर पाई पैसे का पद पावेंगे। अभी तुम्हारा यह फूलों का बगीचा बन रहा है। पहले तुम काँटे थे। जंगल में बन्दर ही रहते हैं। रावण राज्य में सभी हैं काँटे। एक/दो को काँटा लगाते रहते हैं। बाप कहते हैं काम विकार का काँटा बहुत खराब है। यह आदि मध्य अन्त दुख देते हैं। दुख का मूल कारण ही है काम। काम को जीतने से ही जगतजीत बनेंगे। इसमें ही बहुतों को मुश्किलात फील होती है। बड़ा मुश्किल पवित्र बनते हैं। जो कल्प पहले बने थे वही बनेंगे। समझा जाता है कौन पुरुषार्थ कर ऊँच ते ऊँच देवता बनेंगे। नर से ना0 नारी से ल0 बनते हैं ना। नई दुनिया में स्त्री पुरुष दोनों ही पावन थे। अभी पतित हैं। तमोप्रधान बन गये हैं। जो सतोप्रधान थे वही तमोप्रधान आकर बने हैं। फिर दोनों को पुरुषार्थ करना है। यह ज्ञान सन्यासी दे न सके। वह तो करप्टिव हैं। नहीं तो वास्तव में सन्यासियों को गीता पढ़ने का हुकुम नहीं है। वह धर्म ही अलग है निवृत्ति मार्ग का। यहाँ भगवान तो स्त्री पुरुष दोनों को ही पढ़ाते हैं। दोनों को कहते हैं अभी शूद्र से ब्राह्मण बन फिर ल0ना0 देवता बनना है। सभी तो नहीं बनेंगे। ल0ना0 की भी डिनायस्टी होती है। इन्होंने राज्य कैसे लिया यह कोई भी नहीं जानते। समझते भी हैं सतयुग में इन्हों का राज्य था; परन्तु फिर सतयुग को लाखों वर्ष कह दिया है तो यह मूर्खता हुई ना। बाप कहते हैं ...भी मूर्ख हैं, जंगली जानवर हैं। यह है ही काँटो का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। तुम जंगल के काँटे थे। जानवर से भी बदतर थे। अभी फिर बाप तुमको देवता बनाते हैं। यह है काँटों का जंगल। तमोप्रधान मनुष्य बन्दर से भी बदतर हैं। मनुष्य में 5 विकार होने कारण उनको बन्दर से भी बदतर कहा जाता है। बाकी शास्त्रों में तो कथा आदि लिख दी है वह सभी है गलत। लंका कोई सिर्फ यह भारत ही नहीं है लंका तो सारी दुनिया है। पहले नम्बर में वैश्यालय भारत बनता है। अभी तुम फूल बन रहे हो। आगे काँटे थे। बन्दर से भी बदतर थे। सूरत मनुष्य की परन्तु सीरत जानवर मिसल थी। एक/दो दैत्य कहते हैं ना। यह सभी हैं असुर। फिर देवता बनेंगे। यहाँ ... से पहले तुम असुर थे। अभी तुम असुर से देवता बन रहे हो। कौन बनाते हैं? बेहद का बाप। देवताओं का राज्य तो दूसरा कोई था नहीं। यह भी अभी तुम समझते हो। शूद्र आसुरी बुद्धि मनुष्य समझ न सके। जो नहीं समझ सकते हैं उनको ही असुर कहा जाता है। असुर पतित को ही कहा जाता है। यह है बह्माकुमार–कुमारियों की सभा। अगर कोई शैतानी का काम करते हैं तो अपन को ही श्रापित कर देते हैं। पत्थर बुद्धि बन पड़ते हैं। सोने की बुद्धि नर से नारायण बनने वाली तो है नहीं। सबूत भी मिल जाता है। थर्ड क्लास का दास–दासियाँ जाकर बनेंगी। दास–दासियाँ बनने तो है ना। अभी भी राजाओं पास दास दासियाँ तो हैं ना। यह भी गायन किनकी दबी रहेगी धूल में किनकी सारे बाय(आग)..... आग के गोले भी आवेंगे जो जहर के गोले आवेंगे। मौत आना तो जरूर है ना। ऐसी–2 तैयारियाँ कर रहे हैं जो कोई मनुष्य की वा हथियार आदि की दरकार न रहेगी। वहाँ से ही बैठे2 ऐसे बॉम्स छोड़ेंगे उनकी हवा ऐसी फैलेगी तो झट खलास कर देगी। ½ सौ करोड़ का विनाश होना है। कम बात है क्या! सतयुग में कितने थोड़े होते हैं। बाकी सभी चले जावेंगे शान्तिधाम। जहाँ हम सभी आत्माएँ रहती हैं। सुखधाम है स्वर्ग। दुखधाम है यह नर्क। यह चक्र फिरता रहता है। पतित बनने से दुखधाम बन जाता है फिर बाप सुखधाम में ले जाते हैं। परमपिता परमात्मा अभी सर्व की सद्गति कर रहे हैं। तो खुशी होनी चाहिए ना। मनुष्य डरते हैं। यह नहीं समझते मौत से ही गति सद्गति होती

है। तुम बच्चे जानते हो। यह तो जानते हो स्कूल में नम्बरवार पढ़ते हैं। कोई तो फुल पास हो स्कालरशिप लेते हैं। कोई नापास हो जाते हैं। तो नापास होने वालों की आसुरी कर्तव्य ही होते हैं। उनमें सभी भूत हैं। देह–अभिमान का भूत, क्रोध का भूत, लोभ–मोह का भूत है। यह भी छूटने में टाइम लगता है। आधा कल्प से यह सभी विकार प्रवेश होते हैं। बाप आकर फिर से एक जन्म में ही देवता बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम इस समय संगम पर हैं। सतयुग में होते हैं थोड़े देवी–देवताएँ। बाकी सभी इतने अनेक धर्मों के मनुष्य खलास हो जावेंगे। फिर सतयुग में एक धर्म देवी देवता ही रहेंगे। आत्मा ऊपर से आती रहती है ना। वह है निराकारी दुनिया। आत्मा साकार में आती है तो नाम पड़ता है जीवात्मा। बाप तो सदैव निराकारी दुनिया में ही रहते हैं। वह आते ही हैं एक बार, नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश करने। बच्चों को ही नालेज देते हैं। परन्तु जो पत्थर बुद्धि हैं उनको यह नालेज देने में कितना मुश्किल होता है। तुम बड़े2 म्युजियम आदि खोलते हो। बड़ी2 वजीर अमीर आते हैं, वह तुम्हारा सुनते ऐसे हैं जैसे कि जंगल के बन्दर। कहेंगे यह आपका ज्ञान बहुत ही अच्छा है; परन्तु हमको फुर्सत नहीं। अरे कल करते2 काल खा जावेगा फिर कब सुनेंगे। बैठे2 मौत आ जाता है। परन्तु है जैसे बिल्कुल जानवर बुद्धि। बाप है भी गरीब निवाज। भारत है सबसे गरीब। कंगाल। भारत जितना कर्जा और कोई नहीं उठाते हैं। इतनी भूख कहाँ नहीं है। भारत ही बहुत साहुकार था। अभी तो बहुत गरीब है। फिर बाप साहुकार बनाते हैं। गरीबों को ही साहुकार बनाते हैं, साहुकार फिर भी गरीब हो जावेंगे। यहाँ का यह धन आदि तो सभी अल्पकाल के लिए है। यह भी सभी खत्म हो जावेगा। किनकी दबी रहेगी धूल में.....सफली होगी उनकी जो ट्रान्सफर करते हैं सतयुग के लिए। सुदामा ने भी चावल मुट्ठी दी तो 21 जन्मों के लिए महल मिली ना। अभी पतित मनुष्य दान–पुण्य करते हैं, धर्मशाला वा कालेज आदि बनाते हैं, उनको कोई 21 जन्मों लिए नहीं मिलता है। अल्पकाल लिए एक जन्म में मिलता है। क्योंकि इनडायरेक्ट देते हैं। अभी तो बाप डायरेक्ट देते हैं। बाप आकर स्वर्ग बनाते हैं। कहते हैं यह सभी खत्म हो जावेंगे। स्वर्ग में तो सिर्फ इन देवी देवता का राज्य था। जो अभी स्थापन हो रहा है। यह सभी फिर न रहेंगे।

मूल बात बाप बच्चों को समझाते हैं शिवबाबा को याद करो तो जन्म–जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। ऋषि–मुनि आदि सभी कहते हम नहीं जानते। नेती–नेती कह देते। वह समझते हैं कल्प की आयु लाखों वर्ष है। बाप कहते हैं 5000 वर्ष। न जानने वाले को नास्तिक कहा जाता है। जानने वाले को आस्तिक कहा जाता है। यह है ही नास्तिकों की दुनिया। तुम हो आस्तिक; क्योंकि तुम बेहद के बाप को जानते हो। श्री श्री शिवबाबा की मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ देवता बनेंगे। और कोई बना न सके। जगत का गुरु एक ही है तो वही सारी ....त ही सद्गति करते हैं। बाकी जो भी श्री श्री 108 जगद्गुरु कहलाते हैं वह सभी हैं ठग। जिनके लिए ही शास्त्रों में नाम रखा गया है हिरण्यकश्यिप जैसे दैत्य हैं। जो अपन को परमात्मा कह पूजा कराते हैं। बाप कहते हैं सभी में परमात्मा है नहीं। सभी में 5 भूत माया की है। सभी में परमात्मा कैसे हो सकता। सभी बाप ही बाप ... होंगे। भाई–भाई हो तब तो भाइयों को बाप से वरसा मिले। सभी बाप तो हो न सके। शिवोहम् का ...न लगा बैठते हैं फिर माइयाँ जाकर लोटी चढ़ाती हैं। यह है सबसे बड़े दैत्य। हिरण्यकश्यप। कहाँ मैं सभी की सद्गति करने वाला वह कहाँ दुर्गति करने वाला। घर–बार छोड़कर जाते हैं। स्त्री विधवा बन जाती। बच्चे ऑरफन बनके बन पड़ते। तो यह पाप हुआ ना। वह पाप उन पर चढ़ता रहता है। दूसरे तरफ फिर सन्यास कर पवित्र बने हैं। तो थोड़ा उसका फल मिल जाता है। एक तरफ पाप करते हैं दूसरे तरफ पावन बनते हैं। यह सारी ... निर्धण की है। धणी–धोरी कोई है नहीं। घर–2 में झगड़ा मारा–मारी लगी पड़ी है। ऐसे सतयुग में नहीं होता। (दी)पमाला पर दीवा जगाते हैं। अभी तुम आत्माओं का ज्योत जग रही है। पहले आत्मा जब सतोप्रधान थी तो उन... ताकत थी। अभी है तमोप्रधान। जैसे मोटर से बैटरी डल हो खत्म हो जाती है तो खड़ी हो जाती है। तुम्हारी आत्मा में बाकी थोड़ा जाकर रही है। तुम्हारी बैटरी 100% फुल थी तो सतोप्रधान थी। फिर चलते–2 खलास हो ... है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।